अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस एवं राजाश्रय

किसी भी सिद्धान्त या पद्धति को जब राजाश्रय मिल जाता है तो उसका विकास त्वरित गति से होने लगता है। और साथ ही साथ इसका प्रचार प्रसार भी सम्पूर्ण मानवता के हित में होता है। योग ऐसा ही एक सिद्धान्त है जिसे हम जीवन की ऊर्जा कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यदि इसका विकास एक नियमबद्ध तरीके से हो तो जनमानस इससे लाभान्वित भी होगा और दूसरों को भी लाभ पहुंचायेगा। इतिहास गवाह है कि जब जब किसी धर्म व संस्कृति को स्थापित किया गया, तो वो एक आंचलिक स्तर पर था। लेकिन धीरे-धीरे उसका वृहद रूप सामने आया। उदाहरण के रूप में बौद्ध व जैन धर्म हमारे समक्ष हैं। साथ ही साथ रघुवंश को भी भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए राजाश्रय मिला। इसी क्रम में राजयोग को भी राजाश्रय की आवश्यकता है और उसे हम और आप ही राजाश्रय दे सकते हैं। वैसे तो इसकी स्थापना पूर्व में हो चुकी है, बस अंजाम तक पहुंचाना बाकी है...

ब.कु. रमेश शाह,मैनेजिंग ट्रस्टी,
वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रीच्युअल ट्रस्ट

संयुक्त राष्ट्र (United Nation) की सर्वसाधारण सभा में भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने एक प्रस्ताव रखा था कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस हर साल मनाया जाये। बाद में यही बात उन्होंने विश्व के 20 बड़े देशों की (G-20 Summit) शिखर परिषद हुई उसमें भी उन्होंने यह बात कही। बाद में संयुक्त राष्ट्र ने भारत की इस बात को उठाया और सभी देशों ने इस बात पर अपनी सहमति दी। इस प्रकार 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का निश्चय हुआ।

यह भी एक ईश्वरीय संकेत है कि कैसे शिवबाबा ने यह कार्य किया। देखा जाये तो 21 जून को रविवार है और वह भी मास का तीसरा रविवार। हमारे ईश्वरीय परिवार में भी मास के तीसरे रविवार को हम सभी अन्तर्राष्ट्रीय योग करते हैं और इसी बात को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली, यह बहुत बड़ी बात है। बाबा के ज्ञान में हमारे मुख्य चार सबजेक्ट्स हैं- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा – इसमें भी योग का स्थान बहुत ऊँचा है। हमारे दैवी परिवार में भी विशेष अमृतवेले के योग को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।

अब तक हमारा सहज राजयोग केवल दैवी परिवार तक सीमित था। वैसे तो कई लोग योग करते हैं।

भारतीय जीवन बीमा का भी स्लोगन है- योगक्षेम: वहाम्यहम्, कई शैक्षणिक संस्थाओं का स्लोगन है- योग: कर्मेसु कौशलम् आदि-आदि। अब योग को धर्मादा गतिविधि के रूप में स्वीकार किया गया है। आजकल जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को धर्मादा गतिविधि के रूप में लिया है वैसे ही योग भी एक पाँचवा विषय है जिसे धर्मादा गतिविधि के रूप में लिया गया है।

1986-87 में भारत के तत्कालिन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी के नेतृत्व में नई शिक्षा प्रणाली बनाई गई थी, उसमें भी योग की शिक्षा को शिक्षा के रूप में मान्य किया गया। उस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा की व्याख्या इस प्रकार है- जहां शिक्षा द्वारा अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति है वहीं सर्वांगीण विकास हो सकता है, यही शिक्षा है।

इसी प्रकार योग के महत्व को राजाश्रय मिला है। राजाश्रय अर्थात विश्व के सभी राष्ट्रों द्वारा उसे मान्यता मिली है और साथ-साथ कई इण्डस्ट्रीज़ द्वारा CSR (Corporate Social Responsibility) के अन्तर्गत विश्व के अंदर योग के स्थान को महत्व दिया गया है। इस प्रकार से योग की कार्यशक्ति को राजाश्रय मिला है। विश्व के इतिहास में हम देखते हैं कि जब तक किसी भी प्रवृत्ति को राजाश्रय नहीं मिलता है तब तक उसका प्रचार-प्रसार

त्वरित गति से नहीं होता।

इसी संदर्भ में बौद्ध धर्म की बात आती है। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने गया में तपस्या की, बाद में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करना शुरु किया। कहानी में जैसे बताया कि सम्राट अशोक को एक सज़ा मिली थी और उस अनुसार उन्हें सूर्यास्त के समय से पहले मृत्युदण्ड देना था। उस समय सूर्यास्त के समय घंटानाद होता था। उस समय सम्राट अशोक को सज़ा से बचाने हेतु एक बौद्ध साध्वी उस घंटे पर बैठ गई। जब घंटा बजाने लगे तो उस साध्वी का शरीर ही टकराने लगा और आवाज़ उत्पन्न ही नहीं हुआ और फिर सूर्यास्त हो गया। इस प्रकार सम्राट अशोक का मृत्युदण्ड टल गया। जब सम्राट अशोक को इस साध्वी के बारे में मालूम पड़ा तो वह उनसे मिलने गये। साध्वी मृत्युशैय्या पर थी। सम्राट अशोक ने उनसे उनकी अंतिम इच्छा के बारे में पूछा तो साध्वी ने सम्राट अशोक से कहा कि सम्राट अशोक बौद्ध धर्म स्वीकार करें और उस धर्म का प्रचार प्रसार करें। बाद में सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, उसका प्रचार-प्रसार किया, उसे आगे बढ़ाया, अनेक स्तूप, पैगोडा आदि बनवाये तथा अनेक बौद्ध साधुओं को इस धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु देश-विदेश में भेजा। राजाश्रय मिलने के कारण बौद्ध धर्म सारे विश्व में फैल गया।

इसी प्रकार ईसाई धर्म को भी राजाश्रय मिला। हम सब जानते हैं कि ईसामसीह को सूली पे चढ़ाया, बाद में उनके परम शिष्य सेंट पीटर्स (St.Peters) ने ईसाई धर्म आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया। इस धर्म के प्रचार-प्रसार करने के लिए वह रोम के सम्राट के पास पहुँचे और रोम के सम्राट ने ईसाई धर्म को अपनाया। ईसाई धर्म को रोमन कैथोलिक धर्म के रूप में मान्यता मिली। रोमन सम्राट ने रोम के नज़दीक वैटिकन सिटी (Vatican City) बनाई जिसे राज्य का दर्जा मिला है। वैटिकन में सबसे बड़ा पोप रहता है। वहां से ही सारे विश्व में ईसाई धर्म का संचालन होता है। अर्थात इससे भी सिद्ध होता है कि ईसाई धर्म का कारोबार पहले जेरुसलेम में था परंतु रोमन सम्राट से राजाश्रय मिलने से उस धर्म का कारोबार अति तीव्र गति से बढ़ गया। और आज विश्व में 2.2 अरब जनता ने ईसाई धर्म अपनाया है।

धर्म का विस्तार देखते हैं तो भारतीय संस्कृति में दिखाई देता है कि श्रीकृष्ण तथा कौरव-पाण्डव आदि सभी राजघराने के हैं। कुरुक्षेत्र में युद्ध के मैदान में जो गीता ज्ञान दिया तब भी सभी राजायें उपस्थित थे। महाभारत में 14 गीताओं का गायन है। उसमें भगवान ने यही कहा है कि एक सत्धर्म की स्थापना करने तथा अधर्मों का विनाश करने के लिए मैं अवतार लेता हूँ। जैसे श्रीकृष्ण ने कंस को मृत्युदंड दिया, इस प्रकार धर्म को राजाश्रय देकर धर्म का संरक्षण किया। इस प्रकार राजाश्रय से ही धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य सहज एवं सम्पन्न हुआ।

रघुवंश के राजा राम उन्होंने भी रावण, मारीच आदि राक्षसों का संहार किया था। भारतीय संस्कृति की रक्षा करने हेतु यह युद्ध हुआ। राम का साथी सुग्रीव भी राजा था। श्रीराम ने सुग्रीव की मदद करने लिए बाली का संहार किया। अर्थात धर्म को राजाश्रय मिला।

परमात्मा द्वारा आदि सनातन धर्म की स्थापना हुई। कल्पवृक्ष की पहली शाखा 'ज्यू' धर्म के स्थापक मोजेस थे जिन्होंने ही परमात्मा के 10 सूत्र (10 commandments) के द्वारा आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार किया। मोजेस भी राजकुमार थे। उनका और उनके छोटे भाई रामसे के बीच में संघर्ष था और मोजेस ने अपना राज्य अधिकार अपने भाई को दिया व खुद ज्यू धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे। बाद में वह बहुत नामीग्रामी बन गये। अमेरिकन सरकार यहूदियों को सब प्रकार की सहायता देती है। इस प्रकार ज्यू धर्म को राजाश्रय मिला और उस धर्म का कारोबार अच्छी रीति चला।

इस्लाम धर्म के संस्थापक अब्राहम भी राजा थे और यह दूसरी शाखा इस्लाम धर्म की कल्पवृक्ष से निकली। अब्राहम के नाम पर कई लोगों ने इस्लाम धर्म अपनाया। वर्तमान समय भी इस्लाम धर्म में उनके नाम पर कई धार्मिक उत्सव मनाये जा रहे हैं।

जैन धर्म के संस्थापक महावीर भी राज्य परिवार से थे और उन्होंने भी अपना राज्य त्याग किया और तपस्या की तथा उनके द्वारा प्रस्थापित जो राज्य था उसमें उन्होंने जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया और बाद में वह राज्य उनके द्वारा प्रस्थापित होने के कारण उस धर्म को राजाश्रय मिला। दक्षिण भारत में उनके ही विचारों के आधार पर श्रवणबेळगोळ में मूर्ति की स्थापना हुई। उस मूर्ति का इतिहास यह है कि दो भाई राजगद्दी के लिए लड़ रहे थे। एक बार जब उनकी लड़ाई हो रही थी तो बड़े भाई ऋषभवदेव ने छोटे भाई को परास्त किया और उसे मारने के लिए बड़े भाई ने प्रहार करने के लिए मुष्टिप्रहार अस्त्र हाथ में उठाया, तब अचानक उसे छोड़ दिया और अपना राज्य अपने छोटे भाई को दे दिया। खुद जैन धर्म में चला गया। उनके यशोगान अर्थ यह बहुत बड़ी मूर्ति बनाई और वह तीर्थंकर के रूप में प्रसिद्ध हुए।

आबू का दिलवाड़ा मंदिर भी ऐसे ही राजाश्रय मिलने के

- शेष पेज 10 पर